गणधर वलय पूजन विधान

माण्डला

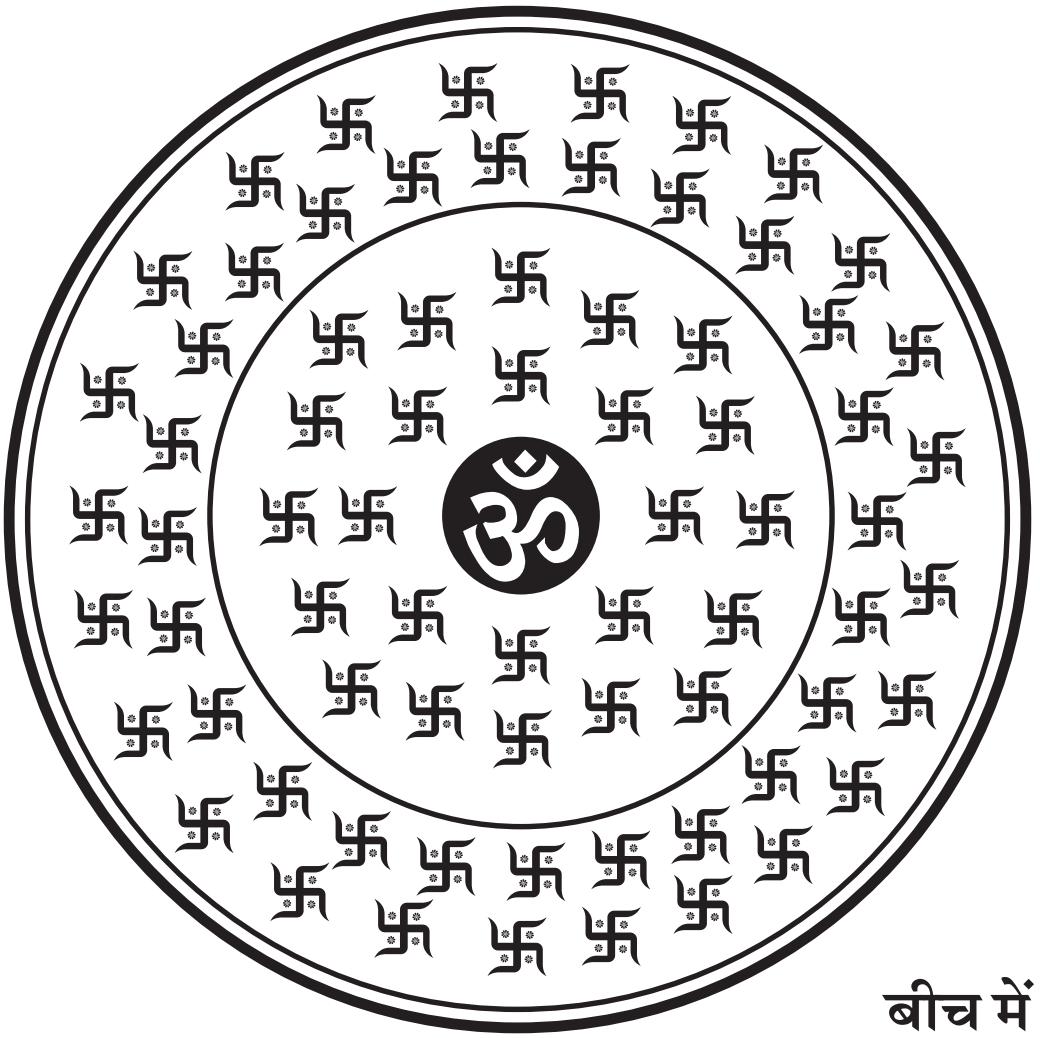

बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 24 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ – 48 अर्घ्य

कुल – 72 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति	:	गणधर वलय पूजन विधान
आशीर्वाद	:	प.पू.गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज
प्रेरणा स्तोत्र	:	चयो शिरोमणि आ.श्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम 2022, प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सम्पादन	:	श्रमणमुनि श्री सुव्रत सागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085 ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425 ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी, मो.: 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक :

श्रीमती संतोषदेवी जैन पाण्ड्या, जैन वस्त्रालय

नवादा विहार, कलेक्ट्रेट के सामने

"1452 गणधरों की महाअर्चना"

कीजे गणधर वलय विधान, संकट टल जाएँ सारे।
कीजे समवशरण का ध्यान, जागे उर में उजियारे।।
कीजे.....।।1।।
विशद भाव से पूजन करके, करो स्वयं का ध्यान।
शुद्धातम का आलंबन ले, करो स्वयं कल्याण।।
कीजे.....।।2।।
ऋद्धि सिद्धियाँ सकल सिद्ध हो, जाएँगी तत्काल।
सिद्ध स्वपद निश्चित पाओगे, पावन परम विशाल।।
कीजे.....।।3।।

24 तीर्थंकरों के अलग–अलग गणधर शिष्य 1452 थे।

श्री आदिनाथ के 84 गणधर, अजितनाथ के 90 गणधर, श्री संभवनाथ के 105 गणधर, श्री अभिनन्दन नाथ के 103 गणधर, श्री सुमतिनाथ के 116 गणधर, श्री पद्मप्रभु के 110, श्री सुपार्श्वनाथ के 95, श्री चन्द्रप्रभु के 93, श्री पुष्पदंत के 88, श्री शीतलनाथ के 81, श्री श्रेयांश नाथ के 77, श्री वासुपूज्य के 66, श्री विमलनाथ के 55, श्री अनन्तनाथ के 50, श्री धर्मनाथ के 43, श्री शांतिनाथ के 36, श्री कुंथुनाथ के 35, श्री अरहनाथ के 30, श्री मल्लिनाथ के 28, श्री मुनिसुव्रतनाथ के 18, श्री नमिनाथ के 17, श्री नेमिनाथ के 11, श्री पार्श्वनाथ के 10, श्री महावीर के 11 इस प्रकार 24 तीर्थंकर के 1452 गणधर होते हैं।

उन्हीं गणधर देवों की दीपार्चना एवं पूजा हेतु इस गणधर वलय विधान एवं दीपार्चना का सृजन वर्तमान के सर्वाधिक 250 विधान के रचयिता विधानाचार्य गुरुवर श्री 108 श्री विशद सागर जी महाराज द्वारा यहाँ किया है। नव दीक्षार्थी जैनेश्वरी दीक्षा के पूर्व इन्हीं गणधर गुरु की महार्चना इसी गणधर वलय विधान से करते हैं।

सर्व विघ्ननिवारण, ऋद्धि, विद्या, बुद्धि मंत्रों की सिद्धि की महार्चना अध्यात्म की अनुत्तर यात्रा हेतु दीक्षा से पूर्व यह विधान करना अति आवश्यक है। विशुद्धि पूर्वक गणधर वलय मंत्र स्तोत्र व पूजा विधान दीपार्चना आदि करने से पुण्य का आश्रव एवं पाप की निर्जरा होती है।

दीक्षार्थियों के अतिरिक्त यदि संसारी सुखेच्छु प्राणी अपने परिवार आदि के सर्व विघ्नो को शांत करना चाहते हैं उन्हें भी पूर्ण मनोयोग से गौतम गणधर स्वामी के मुखकमल से निकले हुए अत्यन्त महिमाशाली मंत्रों का जाप्य एवं पूजा विधान करना चाहिए ये संपूर्ण ऋद्धि सिद्धि को देने वाले और सर्व संकटों को हरने वाले 48 मंत्र 48 काव्यों में दिए हैं। पूजा विधान करने वाले क्रम से 24 व 48 अर्घ्य चढ़ाए, जिनको सिर्फ दीपार्चना करनी है वे मुख्य 1234 गणधरों के 24 व 48 ऋद्धि मंत्रों के दीप जलाएँ एवं मंत्रों में नमः के बाद अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा के स्थान पर नमः के बाद ''स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि'' बोलें।

गणधर वलय के व्रत करने वाले 48 व्रत करें व्रतों में 48 मंत्रों की अलग-अलग जाप करें। 48 जाप्य 48 काव्यों के मंत्रों में दी हैं, जैसे पहले नम्बर के काव्य के मंत्र में '' ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं जिनेभ्यः नमः'' इसी प्रकार 48 काव्य मंत्रों से 48 जाप्य करें।

व्रत की उत्तम विधि उपवास एवं जघन्य विधि एकाशन है गणाचार्य श्री विरागसागर जी के परम शिष्य परम पूज्य चर्या शिरोमणि देशनाचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज एवं परम पूज्य विधानाचार्य श्री विशद सागर जी का 18 वर्ष पश्चात भव्य मंगल मिलन गया जी में हुआ उसी समय कोरोना की वजह से नगर में लॉकडाउन भी लग गया 66 दिन तक दोनों संघों के सान्निध्य में धर्म की अपूर्व प्रभावना हुई गया जी में व कुण्डलपुर में भव्य पंचकल्याणक हुआ गणिनी आर्यिका 105 विशाश्री माताजी के संघस्थ दो क्षुल्लिका दीक्षा हुई। गणधर वलय विधान हुआ उसी समय आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी के संघस्थ 100 से भी अधिक आचार्य श्री द्वारा रचित संपादक मुनि श्री सुव्रत सागर जी ने गणधर वलय विधान के बारे में चर्चा हुई हमने आचार्य गुरुवर श्री विशद सागर जी से जिन्होनें 225 प्रकार के पूजा विधानों की रचना की है लघु रूप से गणधर वलय विधान व दीपार्चना की रचना के लिए कहा। उन्होंने तुरन्त ही 48 घन्टे के भीतर प्रस्तुत गणधर वलय विधान की रचना गया जी में की देशनाचार्य श्री विशुद्ध सागर ने भी ताड़पत्र पर ''दिव्य देशना ग्रन्थ'' लिखा दोनों शास्त्रों को पालकी में विराजमान कर चतुर्विध संघ सान्निध्य में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई आचार्य श्री इसके पूर्व 1452 गणधर परमेष्ठी का वृहद गणधर वलय विधान भी लिख चुके हैं आशा है सामान्य एवं विशेष अवसरों पर यह विधान व दीपार्चना कर आप अपने जीवन को सौभाग्यशाली बनाएंगे, इसी भावना के साथ गुरु चरणों में त्रय भक्ति युत् नमोस्तु–3।

मुनि श्री विशाल सागर जी
संघस्थ आचार्य श्री विशद सागर जी मुनिराज

अंतस् की भावना

गुरुवर की कृपा जग में सबसे निराली।
होली यही, दशहरा यही है दिवाली।।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हमेशा एक से बढ़कर एक तपोनिष्ठ साधु-संत, ऋषि- महर्षि एवं महापुरुष हुए हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक एवं आचरणात्मक नैतिक मूल्यों की अजस्र धारा निरन्तर प्रवाहित की है। जिनमें अवगाहन कर अनेकों जीवों ने अपने जीवन को सफल बनाया है। ऐसे ही संत-मुनियों में अद्वितीय है परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर की पावन वाणी **सत्यं-शिवं-सुन्दरं** की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्तिद्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है।

समस्त लोककल्याण की भावना से युक्त कविहृदय, **क्षमामूर्ति, वात्सल्यरत्नाकर, परमज्ञानी, महायोगी** जो देश की माटी की गरिमा बढ़ा रहे हैं ऐसे अभिवंदनीय, विश्व-वंदनीय गुरुवर के श्री चरणों में कोटिश: नमोस्तु-3

आचार्य श्री के चरणों में अंतिम मनोभावना-

तेरी छत्रछाया गुरुवर मेरे सिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो।।

- ब्र. सपना दीदी
(संघस्थ-आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

चौदह सौ बावन गणधर समुच्चय पूजा

स्थापना (हरिगीतिका-छन्द)

अर्हन्त घाती कर्म नाशी, पाए केवल ज्ञान हैं।
हैं भक्त गणधर देव उनके, भक्त जन के प्राण हैं।।
हैं ऋद्धिधारी जो अलौकिक, पूजते जिन के चरण।
आह्वान हम करते हृदय में, भक्त को लीजे शरण।।

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्टि: ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधर महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

चैतन्य वैभव प्राप्त करने, यह चढ़ाते नीर हैं।
ले भक्त नौका अर्चना की, पा रहे भव तीर हैं।।
जन्मादि रुज हरने यहाँ शुभ, नीर अर्पित कर रहे।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नम: चतु:षष्ठि: ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नम: जलं निर्व.स्वाहा।

संसार के जलते सदन में, हम हुए संतप्त हैं।
हम मोह की मदिरा में गाफिल, हो सके न तृप्त हैं।।
अब मोह ज्वाला शांत करने, गंध अर्पित कर रहे।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वंदना हम कर रहे।।2।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः चंदनं निर्व.स्वाहा।

भण्डार अक्षय निज गुणों का, आज तक सोचा नहीं।
आकांक्षी हो भटके जगत में, खो रहे मौका सही।
सिद्धीश के हम ईश बनने, पुंज अर्पित कर रहे।।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे।।3।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

शुभ पुष्प खिलते ज्ञान तरु में, ब्रह्मचारी बाग में।
मुक्ति ललना नत नयन हो, ताकती अनुराग में।।
अब्रह्म का कालुष हटाने, पुष्प अर्पित कर रहे।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे।।4।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

आध्यात्म में होता रमण तब, भोग तृष्णा भागती।
आनन्द पाने निज गुणों का, भक्ति की रुचि जागती।।
हो अन्त तृष्णा का अतः, नैवेद्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

अज्ञान मिथ्या मोह मल का, तिमिर छाया जो सघन।
निज चेतना में ज्ञान की लौ, प्राप्त करके हों मगन।।
अज्ञान तम का दु:ख हरने, आरती हम कर रहे।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे।।6।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नम: चतु:षष्ठि: ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नम: दीपं निर्व.स्वाहा।

सबको सताते कर्म लेकिन, जो जलाते कर्म को।
वे जीव ही चिद्रूप होकर, प्रकट करते धर्म को।।
हम धर्म से निज कर्म हरने, धूप अर्पित कर रहे।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे।।7।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नम: चतु:षष्ठि: ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नम: धूपं निर्व.स्वाहा।

जिन भक्ति से निज तृप्ति कारी, मोक्ष फल अतिशय लगें।
जो चित् स्वरूपी चेतना के, सरस में रत हो पगें।।
हो मुक्ति का फल भक्ति करके, फल अत: अर्पित करें।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे।।8।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नम: चतु:षष्ठि: ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नम: फलं निर्व.स्वाहा।

कर अष्ट द्रव्यों का सुमिश्रण, अर्घ्य बनता है सही।
सद्भक्त भक्ती करके पाएँ, उर्ध्व स्थित शिव मही।।
त्रय योग से होके समर्पित, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गणधर ऋद्धियों की, वन्दना हम कर रहे।।9।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः चतुःषष्ठिः ऋद्धि सम्पन्न तीर्थंकर गणधराय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पूज्य हैं, गणधर ऋषी महान।
शांतीधारा कर विशद, करते हैं गुणगान।।

(शान्त्ये शांतिधारा....)

दोहा – पुष्पांजलि करते विशद, लेकर पावन फूल।
भाते हैं यह भावना, होंय कर्म निर्मूल।।

(परिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

दोहा – तीर्थंकर चौबीस के, गणधर ऋषी महान।
पुष्पांजलि कर पूजते, करते हैं गुणगान।।

(अथ मण्डलस्यो परिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

24 तीर्थंकरों के प्रधान गणधर पूजा

स्वयं बुद्ध श्री आदिनाथ जी, धर्म प्रर्वतन किए महान।
गणधर हुए चौरासी प्रभु के, "वृषभसेन" जी हुए प्रधान।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
मध्य दीप सम रहे प्रकाशी, दिव्य देशना मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथस्य वृषभसेनादिक चतुरशीति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

श्री ''सिंहसेन'' अजित जिनवर के, गाये गणधर महिमावान।
तीन लोक वर्ती जीवों के, उपकारी नब्बे गुणवान।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथस्य सिंहसेनादिक नवति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''चारुषेण'' सम्भव जिनवर के, कहलाए हैं प्रथम गणेश।
एक सौ पाँच बताए गणधर, समवशरण में गुरु अवशेष।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथस्य चारुषेणादिक पंचोत्तरशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अभिनन्दन स्वामी के गणधर, ''वज्रादिक'' गाए गुणवान।
एक सौ तीन गणी पद वन्दन, करके पूजे महिमावान।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथस्य वज्रादिक त्रयाधिकशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''तोतक'' गणधर सुमतिनाथ के, प्रथम कहे हैं पूज्य विशेष।
एक सौ सोलह गणधर पावन, पूज रहे हम जो अवशेष।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य तोतकादिक षोडषाधिक शत् गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पद्मप्रभ के परम प्रतापी, ''वज्रचमर'' जी गणी प्रधान।
एक सौ दश गणधर का करते, भाव सहित हम भी यशगान।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथस्य वज्रचामरादिक दशादिक शत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गणी मुख्य जिनवर सुपार्श्व के, श्री ''बलदत्तादिक्'' ऋषिराज।
पंच नवति पावन गणेश के, पद में अर्घ्य चढ़ाते आज।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य बलदत्तादि पंचनवति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

चन्द्रप्रभ के गणी तिरानवे, ''दत्तादिक'' हैं अतिशयकार।
जिनके चरण कमल की पूजा, जीवों को करती भव पार।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभनाथस्य त्रिनवति दत्तादिक गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''विदर्भादिक'' अट्ठयासी गणधर, पुष्पदंत के पूज्य विशेष।
पुष्पदंत के सेवाकारी, पूज रहे पाने उपदेश।।

चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथस्य विदर्भादिक अष्टाशीति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शीतलनाथ प्रभू के गणधर, ''अनगारादिक'' इक्याशी।
तीन लोक में पूज्य कहाए, जो अतिशय गुण की राशी।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य अनगारादिक एकाशीति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सप्त अधिक सत्तर गणधर जी, जिन श्रेयांस के रहे महान।
श्री ''कुन्थ्वादि'' गणी की पूजा, करते पाने पद निर्वाण।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य कुंथुआदि सप्तसप्तति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

धर्म अग्रणी वासुपूज्य के, गणधर मंदर आदि त्रिकाल।
रत्नत्रय के धारी छियासठ, काट रहे भव का जंजाल।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनस्य धर्मादिक षट्षष्टि गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

विमलनाथ के पचपन गणधर, प्रथम गणी का है 'जय' नाम।
शिवरमणी के ईश चरण में, करते बारम्बार प्रणाम।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्य जयादि पंचपंचाशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जिनानन्त के गणधर पावन, अरिष्टादि कहलाए पचास।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, करते केवल ज्ञान प्रकाश।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनस्य जयादि पंचाशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

धर्मनाथ जी धर्म चक्र को, धारण कर पाए शिव वास।
अरिष्ट सेन आदिक तैंतालिस, गणधर कीन्हे ज्ञान प्रकाश।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनस्य अरिष्टसेनादि त्रिचत्त्वारिंशद गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''चक्रायुध'' आदि षट्त्रिंशत, शांतिनाथ के हैं अविकार।
गणधर के पद पूज रहे हम, पाने को भवदधि से पार।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य चक्रायुधादि षट्त्रिंशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कुन्थुनाथ के गणी स्वयंभू, आदिक बतलाए पैंतीस।
जिनकी अर्चा भक्ति भाव से, करके चरण झुकाते शीश।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथस्य जिनस्य श्री स्वयंभू आदि पंचत्रिंशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अरहनाथ के प्रथम गणी का ''कुम्भादी'', बतलाया नाम।
गणी तीस हैं मंगलकारी, जिनके चरणों विशद प्रणाम।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनस्य कुंभादित्रिंशत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गणधर मुख्य हैं मल्लिनाथ के, है ''विशाख'' जिनका शुभनाम।
अट्ठाईस गणधर की पूजा, करके पाए शिवपुर धाम।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनस्य विशाखादि अष्टाविंशति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मल्लि आदि श्री मुनिसुव्रत के, अष्टादश कहलाए गणेश।
भव्य जीव उपकारी गुरु के, चरणों वन्दन करें विशेष।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनस्य मल्लिआदिअष्टादश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

श्री नमि जिन की दिव्य देशना, झेले हैं गणधर शुभकार।
सत्रह गणधर कहे आपके, पूज रहे हम बारम्बार।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनस्य सुप्रभादि सप्तदश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नेमिनाथ के गणधर ग्यारह, प्रथम रहे वरदत्त महान।
नारायण बलभद्र आदि के, द्वारा पूज्य हुए गुणवान।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनस्य वरदत्तादि एकादश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पार्श्वप्रभु के गणी स्वयंभू, आदिक दश थे महिमावान।
तीन योग से जिनका अर्चन, करके करते हम गुणगान।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनस्य स्वयंभू आदि दश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीपं स्थापनं करोमि।

प्रथम गणी श्री वीर प्रभु के, इन्द्रभूति गौतम था नाम।
ग्यारह गणधर की पूजा कर, भव से पाएँ हम विश्राम।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।24।।

ॐ ह्रीं श्री वीर जिनस्य इन्द्रभूति गौतमआदिक एकादश गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

आदिनाथ से महावीर तक, तीर्थ प्रवर्तक महिमावान।
समवशरण में गणधर स्वामी, झेले दिव्य ध्वनि महान।।
चौबिस तीर्थंकर के गणधर, चौदह सौ बावन अविकार।
नाश करो सब विघ्न हमारे, अर्चा करते मंगलकार।।25।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनस्य द्विपंचाशदधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जयमाला

दोहा - तीर्थंकर चौबीस के, चौबीस गणी प्रधान।
ऋद्धि मंत्र युत पूजते, हैं जो अतिशय वान।।

(पद्धड़ि छन्द)

जय ऋषभ जिनेश्वर पूज्य पाद, जय अजित जितंकर दोष राग।
जय सम्भव सम्भव कृत वियोग, जय अभिनन्दन नंदित पयोज।।1।।
जय सुमति-सुमति सम्यक् प्रकाश, जय पद्म प्रभ जी पद्म वास।
जय जय सुपार्श्व जिन पार्श्व रूप, जय चन्द्रप्रभ चन्द्र स्वरूप।।2।।

जय पुष्पदंत दम अंतरंग, जय शीतल शीतल वचन भंग।
जय श्रेय श्रेय करुणा समूह, जय वासुपूज्य पूज्यानुपूज्य।।3।।
जय विमल विमल गुण श्रेणि थान, जय जयति अनन्तानन्त ज्ञान।
जय धर्म धर्म तीर्थेश संत, जय शांति शांति जिनकर्म अंत।।4।।
जय कुंथु कुन्थु आदिक अशेष, जय अर मोहारि जय जिनेश।
जय मल्लि मल्लि आ दाम गंध, जय मुनिसुव्रत सुव्रत निबन्ध।।5।।
जय नमि नमि चामर निकर स्वामि, जय नेमि धर्मरथ चक्र नेमि।
जय पार्श्व पार्श्व छेदन कृपाण, जय वर्धमान जय वर्धमान।।6।।
जय प्रश्न करें आके नरेश, जो भव्य जीव पावें विशेष।
जय दिव्य देशना दें जिनेश, जिसको झेले उनके गणेश।।7।।
जय तीर्थंकर चिद्रूप राज, भव सिन्धु मध्य तारण जहाज।
जय मुक्ति वधू के श्रेष्ठ ताज, हे शिव पथ गामी ! पूज्य पाद।।8।।

(घत्ता-छन्द)

चौबीस जिनेश्वर, नमित सुरासुर,तीन लोक पति पूज्य वरा।
जय जय तीर्थंकर, दिव्य दिवाकर, तव पद पूजें सर्व नरा।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनस्य द्विपंचाशदधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-तीन लोक में पूज्य हैं, तीर्थंकर चौबीस।
जिन पद में वन्दन 'विशद', करते सर्व ऋषीश।।

(इत्याशीर्वादः)

''अड़तालीस ऋद्धियों के अर्घ्य''

दोहा- अड़तालिस हैं श्रेष्ठतम, ऋद्धी मंत्र महान।
पूजें ध्यायें भाव से, पाने शिव सोपान।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

''णमो जिणाणं'' श्री जिनवर के, चरणों में शत्-शत् वन्दन।
केवल ज्ञान ऋद्धि के धारी, बनकर शिवपुर करें गमन।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं जिनेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ऋद्धी ''णमो ओही जिणाणं'', योग्य सीमा में हो चिंतन।
अवधि ज्ञान ऋद्धी धारी ऋषि, के चरणों शत्-शत् वन्दन।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओही जिणाणं अवधि जिनेभ्यः नमः अर्घ्यं
निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ऋद्धि ''णमो परमोही जिणाणं'', धारी करते मोक्ष गमन।
परमावधि ऋद्धि के धारी, ऋषियों का करते अर्चन।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोही जिणाणं परमावधि जिनेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ऋद्धि ''णमो सव्वोहि जिणाणं'', धारी पाएँ लक्ष्य चरम।
सर्वावधि ऋद्धी धर ज्ञानी, पावें केवल ज्ञान परम।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्वावधि जिनेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ॐ णमो ''अणंतोहि जिणाणं'', करने वाले कर्म शमन।
अनन्तावधि धारी ऋषिवर के, चरणों कोटि कोटि वन्दन।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं अनन्तावधि जिनेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''णमो कोट्ठ बुद्धीणं'' ऋद्धी, कोष्ठ में रक्खे हुए रतन।
भिन्न-भिन्न जाने युगपत् जो, ऐसा पाएँ ज्ञान सघन।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं बुद्धिऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''बीज बुद्धीणं'' ऋद्धी, धारी बीज से फल उत्तम।
पाते हैं अधिकाधिक वैसे, ऋद्धी देती फल अनुपम।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं बीज बुद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''पदानुसारीणं'' के, पद से जाने सर्व कथन।
ऋद्धीधर ऋषियों की अर्चा, से नश जाए जन्म मरण।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादानुसारीणं पादानुसारीणी बुद्धिऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''संभिन्न सोदारण'' ऋद्धी, धारी जाने सर्व कथन।
संभिन्न श्रोतृत्व ऋद्धी पाने, करें वन्दना ऋषी चरण।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्न सोदारण संभिन्न बुद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''सयं बुद्धीणं'' ऋद्धी, से प्रगटाएँ बोधि स्वयं।
प्रगटाते हैं भव्य जीव जो, पाते अनतिचार संयम।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धीणं स्वयं बुद्धित ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''पत्तेय बुद्धीणं'' ऋद्धी, धारी स्वयं करें चिंतन।
क्या हित अहित है जीवन में यह, करते हैं जो नित्य मनन।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''बोहिय बुद्धाणं'' ऋद्धी, धारी पर से बोध परम्।
पाके संयम धारी होते, पाके मैटें सर्व भरम्।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं बोधित बुद्धि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''उजु मदीणं'' ऋद्धी धारी, सर्व मनोरथ के ज्ञाता।
ऋजुमती मन: पर्यय ज्ञानी, ऋषिवर जग जन के त्राता।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं ऋजुमति ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''विउलमदीणं'' ऋद्धी पावें, उत्तम संयम के धारी।
विपुलमति ऋद्धी पाकर भी, रहते हैं जो अविकारी।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं विपुलमति ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''दश पुव्वीणं'' ऋद्धीधारी, दश पूर्वों के हों ज्ञाता।
विद्यायें सम्मुख ललचाएँ, रखते न उनसे नाता।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दश पुव्वीणं चतुर्दशपूर्वित्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''चउदश पुव्वीणं'' ऋद्धी, अंग पूर्व का जिसमें ज्ञान।
द्वादशांग के ज्ञाता अनुपम, होते हैं सद्गुण की खान।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं चतुर्दश पूर्वित्त्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''अट्ठांग महानिमित्त कुशलाणं'', पावन ऋद्धी के धारी।
शकुनादी ज्योतिष के द्वारा, दुःखों के हों परिहारी।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठागं महानिमित्त कुशलाणं अष्टांग निमित्त ज्ञात्त्व सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''विउव्वइड्ढी पत्ताणं'' दुर्धर तप तपते गुणवान।
प्रगटाएँ ऋद्धी वे ज्ञानी, करें जगत जन का कल्याण।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्डिपत्ताणं विक्रिया ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''विज्जाहराणं'' ऋद्धी, से होते ऋषि अंतर्ध्यान।
भव्य जीव जिनके चरणों मे, भाव सहित करते गुणगान।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जहराणं विद्याधरत्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''चारणाणं'' ऋद्धीधर, चारण ऋद्धी धार श्रमण।
परम पूज्य निर्ग्रन्थ शिरोमणि, करते हम शत्-शत् वन्दन ।।

ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''पण्ण समणाणं ऋद्धी'', धारी हों अति प्रज्ञावान।
जिनकी अर्चा करके हम भी, पाएँ वीतराग विज्ञान।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं प्रज्ञा श्रमण सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''आगास गामीणं'' ऋद्धी, धारी करते गगन गमन।
आश्चर्य होता जिन्हें देखकर, हों ऐसे निर्ग्रन्थ श्रमण।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गमीणं आकाशगामी ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''आसी विसाणं'' ऋद्धी धारी, के पद कोटि-कोटि वन्दन।
वचन सिद्धि करते तप करके, जिनका जीवन होय चमन।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं आशीर्विषत्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''दिट्ठि विसाणं'' ऋद्धी अनुपम, ऋद्धीधारी पूज्य श्रमण।
विष को निर्विष करें ऋद्धि से, जीवन में हो जाय चमन।।
ऋद्धी मंत्र सहित गणधर के, चरणों में करते अर्चन।
मोक्ष मार्ग के राही बनने, करते बारम्बार नमन।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं दृष्टि विषत्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''उग्ग तवाणं'' ऋद्धी द्वारा, तप कर करते कर्म विनाश।
कर्म निर्जरा हेतू करते, संयम पालन व्रत उपवास।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं उग्रतप: ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''दित्त तवाणं'' ऋद्धी, से तन होवे दीप्तिवंत।
आत्म विशुद्धी करते हैं जो, रत्नत्रय के धारी संत।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं दीप्त तप: ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''तत्त तवाणं'' ऋद्धी, धारी तप बल वीर अपार।
लेते हैं आहार किन्तु वे, करते नहीं हैं कवलाहार।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं तप्ततपः ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''महातवाणं'' धारी, ऋद्धी से तप करें महान।
कर्म निर्जरा करने हेतू, करते हैं जो अतिशय ध्यान।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं महातपः ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''घोर तवाणं'' ऋद्धी, धारी तप करते हैं घोर।
निज आतम को ध्याने वाले, होते मन में भाव विभोर।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं घोरतपः ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''घोर गुणाणं'' ऋद्धी, पाकर गुण प्रगटाएँ अमल।
घोर गुणों के धारी ऋषि के, पूज रहे हम चरण कमल।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं घोरगुण ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम:
अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''घोर पराक्रम'' ऋद्धी मुनिवर, प्रगटाते कर आतम ध्यान।
होंय पराजित जिनके आगे, उत्तम से उत्तम बलवान।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं ,करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण परक्कमाणं पराक्रम सम्पन्नेभ्य: नम:
अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''घोर गुण बंभयारीणं'', ब्रह्मचर्य धर परम श्रमण।
ऋद्धि सिद्धि को पाने वाले, निज आतम में करें रमन।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण बंभयारीणं घोर गुण ब्रह्मचारित्व ऋद्धि सम्पन्नेभ्य:
नम: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''णमो आमोसहि पत्ताणं'' यह, ऋद्धी परमौषधि स्वरूप।
ऋद्धीधर ऋषि के पद वन्दन, पाने वाले अर्हत् रूप।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित वन्दन।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं आमर्शौषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''खेल्लोसहि पत्ताणं'' ऋद्धी, धारी ऋषि गाए अविकार।
मुनि की लार खंखार आदि मल, औषधि बनते मंगलकार।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''णमो जल्लोसहि'' ऋद्धी का शुभ, लोक में अतिशय रहा प्रभाव।
तन का स्वेद है रोग निवारी, तारें भव सागर से नाव।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं जल्लौषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''विप्पो सहि पत्ताणं'' यह, ऋद्धी है औषधि गुणवान।
मल मूत्रादि स्पर्शित वायू, से हो जाए रोग निदान।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं विप्रौषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''सव्वोसहि पत्ताणं'' है, ऋद्धी अनुपम औषधि वंत।
तीन लोक में पूज्य मुनीश्वर, इसके धारी होते संत।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्वौषधि ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ॐ णमो ''मण बलीणं'' ऋद्धी, द्वारा द्वादशांग चिन्तन।
अन्तर्मूहुर्त में स्थिर होकर, ध्याने वाले रहे श्रमण।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं मनोबल ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''वची बलीणं'' ऋद्धीधारी, करें सर्व श्रुत उच्चारण।
जो मुहूर्त में द्वादशांग को, जानें सब श्रुत का लक्षण।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचीबलीणं वचो बल ऋद्धि सम्पन्नेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''काय वलीणं'' ऋद्धी धारी, ऋषिवर हों अति शक्तीवान।
त्रिभुवन कंपित कर सकते पर, करते नहीं हैं उसका मान।।

गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं कायबल ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''खीर सवीणं'' ऋद्धी, धारी ऋषिवर जो अवशेष।
ऋद्धी बल से दूध स्वाद सम, वचन पौष्टिक पाएँ विशेष।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं क्षीरस्रावि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''सप्पि सवीणं'' ऋद्धी, से भोजन जो रुक्ष प्रधान।
रूखा भोजन पाणि पात्र में, हो जाता है सर्पि समान।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्पिस्रावि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ॐ णमो ''महु सव्वीण'' ऋद्धी, से भोजन जो रुक्ष विशेष।
मुनि के कर में ऋद्धी द्वारा, मधु सम भोजन हो अवशेष।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महु सव्वीणं मधुस्रावि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम:
अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ॐ णमो ''अमिय सवीणं ऋद्धी'', से अमृत की हो बरसात।
मुनि की अंजुलि में विष मिश्रित, भोजन से विष का हो घात।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं अमृतस्रावि ऋद्धि सम्पन्नेभ्य:
नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''अक्खीण महानस ऋद्धी'', धारी ऋषि लें जहाँ आहार।
चक्रवर्ति की सैन्य समाए, उस स्थान में विस्मयकार।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं अक्षीणमहानस ऋद्धि सम्पन्नेभ्य:
नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णमो ''वड्ढमाणाणं'' ऋद्धी से, होवे ऋद्धी वृद्धीकार।
केवल ज्ञान प्रकट होने तक, ऋद्धी वर्द्धित हो शुभकार।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं वर्द्धमान: बुद्धिऋद्धि सम्पन्नेभ्य:
नम: अर्घ्यं नि.स्वाहा/स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ॐ णमो ''सिद्धायदणाणं'', ऋद्धी पावें जो ज्ञानी।
सिद्धायतन जिनगृह के दर्शन, सहज प्राप्त करते प्राणी।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं सर्व सिद्धायत ऋद्धि सम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नमो ''भयवदोमहदि'' महावीर, वड्ढमाण ऋद्धीधर जान।
वर्धमान महावीर प्रभू सम, वृद्धीकारी हों गुणवान।।
गणधर वलय में ऋद्धि मंत्र हैं, करते हम जिनका अर्चन।
अर्घ्य चढ़ाते दीपार्चन कर, करते भाव सहित अर्चन।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाण बुद्धिरिसीणं भगवते महति महावीर वर्द्धमान बुद्धिऋद्धिसम्पन्नेभ्य: नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

''पूर्णार्घ्यं''

णमो जिणाणं आदि ऋद्धियाँ, सर्वोत्तम सुखकारी मान।
अड़तालिस ऋद्धी मंत्रों को, जप के पावें सौख्य महान।।
सागारी अनगारी जो भी, करें ऋद्धियों का शुभ जाप।
'विशद' भाव से पूजा करते, उनके कट जाते सब पाप।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं प्रभृति महदि महावीरवड्ढमाणाणं बुद्धिरिसीणं पर्यंत सर्व ऋद्धि प्राप्त सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जयमाला

दोहा – चौंसठ ऋद्धी धारते, अर्हत् गणी ऋषीष।
गणधर वलय विधान कर, झुका रहे हम शीष।।

।। वीर छन्द ।।

बुद्धि ऋद्धि से जग जीवों में, बुद्धी का हो पूर्ण विकाश।
फैला मोह तिमिर इस जग में, उसका हो जाता है ह्रास।।
बल ऋद्धी के द्वारा तन में, बल की वृद्धी होय अपार।
योद्धा कोई भी आ जावे, मुनिवर से न पावे पार।।1।।
परम विक्रिया ऋद्धी पाकर, धारण करते रूप अपार।
ऋद्धी धारी मुनि के पद में, वन्दन करते बारम्बार।।
फूल पात तन्तू जल फल पर, चलते चारण ऋद्धीधार।
गगन गमन भी करते मुनिवर, तिन पद वन्दन बारम्बार।।2।।
तपकर तप ऋद्धी प्रगटाते, जिससे तप करते हैं घोर।
उग्र महातप घोर पराक्रम, तप्त दीप्त तपते अतिघोर।।
औषधि ऋद्धीधारी मुनि के, तन का मल हो जाय विशेष।
करने से स्पर्श व्याधियाँ, नशतीं क्षण में शीघ्र अशेष।।3।।
रस ऋद्धीधारी मुनिवर के, कर में भोजन आते शुद्ध।
सर्व रसों से पूरित होता, मंगलकारी पूर्ण विशुद्ध।।
ऋद्धी है अक्षीण महानश, जिससे वस्तू हो न क्षीण।
अरु अक्षीण महालय ऋद्धी, में आलय होता अक्षीण।।4।।
आठ ऋद्धियाँ मुख्य कही हैं, उनके भेद हैं अड़तालीस।
चौंसठ भेद भी उनके गाए, पाते हैं जो जैन ऋशीष।।

ऋषिवर श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर, भी लेते ना उनसे काम।
निस्पृह वृत्ती धारी साधू, के चरणों में विशद प्रणाम।।5।।

दोहा –तीर्थंकर गणधर मुनी, ऋद्धीधार ऋशीष।
'विशद' झुकाते भाव से, जिन चरणों हम शीष।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं प्रभृति महदि महावीर वड्ढमाणाणं बुद्धिरिसीणं पर्यंत सर्व ऋद्धि प्राप्त सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / स्वस्तये प्रज्ज्वलित दीपं स्थापनं करोमि।

दोहा – पूज्य ऋद्धियाँ लोक मे, सुख समृद्धीवान।
ध्याएँ जो भी भाव से, पावें शिव सोपान।।

इत्याशीर्वाद

''जाप्य मंत्र''

1. ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् चिक्राय झौं झौं नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सर्व ऋद्धिवंत गणधर परमेष्ठीभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा – अर्हत् गणधर ऋद्धियाँ, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
पृथक-पृथक जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(तारक छन्द)

जय हो जय हो तीन लोक में, शोभित जिन अरहन्तों की।
जय हो जय ऋषभ सेनादि, गणधरादि सब संतों की।।

णमो जिणाणं आदि ऋद्धियाँ, तीन लोक में मंगलकार।
निस्पृह वृत्ती धारी साधक, पाते हैं जो अपरम्पार।।1।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, देव श्री अर्हन्त रहे।
मुनि निर्ग्रन्थ हमारे गुरुवर, शिव पथ गामी संत कहे।।
तन चेतन का भेद जानकर, सम्यग्दर्शन पाते हैं।
विषय भोग संसार देह तज, जो वैराग्य जगाते हैं।।2।।
बाह्यरूप निर्ग्रन्थ दिगम्बर, पिच्छि कमण्डल पास रखें।
ज्ञान ध्यान तप लीन रहें जो, निज आतम जिन रूप लखें।।
जो प्रमत्त संयम के धारी, अप्रमत्त पद प्रगटाते।
क्षपक श्रेणि आरोहण करते, अपूर्व करण गुण को पाते।।3।।
ऋषि अनिवृत्तीकरण ऋषी हो, सूक्ष्म सांपराय को घाते।
क्षीण मोही होकर के वे ऋषि, विशद ज्ञान को प्रगटाते।।
समवशरण की रचना करने, को सतेन्द्र तव आते हैं।
प्रभु की दिव्य देशना पावन, गणधर स्वामी पाते हैं।।4।।
मति श्रुत अवधि मनःपर्यय ये, चार ज्ञान शुभ पाते हैं।
णमो जिणाणं आदि ऋद्धियाँ, जिन गणधर प्रगटाते हैं।।
भव्य जीव के समवशरण में, सब क्लेश नश जाते हैं।
अतिशय देव ऋद्धियाँ करके, शुभ महिमा दर्शाते हैं।।5।।
श्री अरिहंत देव गुरु गणधर, ये आदर्श हमारे हैं।
गणधर वलय ये किए अर्चना, जो भी संयम धारे हैं।।
संयम पथ के राही साधक, करें अर्चना भाव विभोर।
विघ्न दूर हो जाएँ सारे, खुशियाँ छाएँ चारों ओर।।6।।

।। घत्ता छन्द ।।

हे अर्हत् स्वामी, अन्तर्यामी, गणधरादि ऋषिवर ज्ञानी।
शुभ ऋद्धि सिद्धियाँ, सब प्रसिद्धियाँ, प्रगटाएँ जो कल्याणी।।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् चिक्राय झौं झौं नमः
चतुषष्टि ऋद्धि सम्पन्न चतुर्विंशति तीर्थंकर 1452 गणधर जिनाय
जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा –विश्व शांति कल्याण की, जागी मन में आस।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पाएँ शिवपुर वास।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

श्री गणधर चालीसा

दोहा – आदिनाथ से वीर एक, तीर्थंकर चौबीस।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।
दिव्य देशना झेलते, गणधर ऋषी महान्।
चालीसा गाकर यहाँ, करते हम गुणगान।।

चौपाई

जय–जय तीर्थंकर शिवकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।1।।
पुण्योदय जिनका शुभ आये, वह तीर्थंकर पदवी पाए।।2।।
पावन केवल ज्ञान जगावें, समवशरण तव देव रचावें।।3।।
ॐकारमय जिनकी वाणी, खिरती जग में जन कल्याणी।।4।।
गणधर होते ऋद्धीधारी, प्रथम कोष्ठ में अतिशयकारी।।5।।

मुनिगण के स्वामी जो गाए, पावन गणनायक कहलाए।।6।।
लघुनन्दन जिनवर के प्यारे, जिनवाणी के राज दुलारे।।7।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान जगाते, गणधर सम्यक् चारित पाते।।8।।
पंच महाव्रत समिति के धारी, होते पंचेन्द्रिय जयकारी।।9।।
समवशरण में दीक्षा पावें, पावन चार ज्ञान प्रगटावें।।10।।
होते हैं जो पंचाचारी, सबको पलवाते अविकारी।।11।।
शिष्यों के जो गुरू कहाते, सुर-नर-मुनि से पूजे जाते।।12।।
द्वादश गण के स्वामी गाए, गणाधीश गणपति कहलाए।।13।।
दिव्य देशना झेलें भाई, जो है जन-जन के हितदायी।।14।।
मंगलमूर्ति अमंगलहारी, नाम अनेक रहे शुभकारी।।15।।
सिद्ध मनोरथ आप कराते, सिद्ध विनायक अतः कहाते।।16।।
गणपति आप गणेश कहाते, नाम गणाधिप प्राणी गाते।।17।।
जिस घर में चर्या को जाते, अन्नपूर्ण वे घर हो जाते।।18।।
चक्री सेना वहाँ पे आए, सारा कटक वहाँ जिम जाए।।19।।
इस प्रकार ऋद्धी के धारी, गणधर होते अतिशयकारी।।20।।
इनके चरणों की रज पाये, रोग-शोक वह पूर्ण नशाये।।21।।
इच्छित फल वह प्राणी पाए, अपना जो सौभाग्य जगाए।।22।।
जल थल नभ पुष्पों पर भाई, फलों पे चलते हैं सुखदायी।।23।।
मेघ धूप मेघों पे चलते, फिर भी पैर कभी ना जलते।।24।।
निष्पृह भू पे चलते जाते, फिर भी जीव कष्ट ना पाते।।25।।
गणधर को जो प्राणी ध्याते, कष्ट दूर जिनके हो जाते।।26।।

गणाधीश गुरु करुणाकारी, ऋद्धी होती सब दुखहारी।।27।।
चिन्ता भारी रोग बढ़ाए, चिन्तन से वह ना रह पाए।।28।।
गणधर के गुण प्राणी गाए, वह अपना व्यापार बढ़ाए।।29।।
कर्जे से प्राणी दब जाए, उससे भी मुक्ती मिल जाए।।30।।
निर्धन भारी दौलत पाए, बिगड़े सारे काम बनाए।।31।।
यात्रा उसकी हो सुखकारी, दूर होय सारी बीमारी।।32।।
आकस्मिक दुर्घटना होवे, जिससे प्राणी जीवन खोवे।।33।।
प्राणी यदि घायल हो जाए, भक्ती से बहु शांती पाए।।34।।
अज्ञानी सद्ज्ञान जगाए, शिवपुर का राही बन जाए।।35।।
बुद्धी बल हर प्राणी पाए, ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य जगाए।।36।।
आधि-व्याधि के होते नाशी, गणधर होते ज्ञान प्रकाशी।।37।।
गणधर को जो पूजे ध्याए, गणधर वलय विधान रचाए।।38।।
पावन मुनि की दीक्षा पाए, वह प्राणी गणधर बन जाए।।39।।
'विशद' यहाँ चालीसा गाए, गणधर बन शिवपदवी पाए।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़ते हैं जो जीव।
सुख शांती सौभाग्य पद, पाते पुण्य अतीव।।
रोग-शोक दुख दूर हो, नश जाएँ सब पाप।
बढ़े भाग्य सुख सम्पदा, किए भाव से जाप।।

जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः।

गणधर वलय की आरती

गणधर जी अविकार हैं, अतिशय मंगलकार हैं।
चौबिस जिन के गणधर की हम, करते जय-जयकार हैं।। टेक।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, अनन्त चतुष्टय पाते जी-21
स्वर्गलोक के देव सभी मिल, समवशरण बनवाते जी-2।।
गणधर...।।1।।
दिव्य देशना देकर जिनवर, भव्यों का तम हरते हैं -21
चार ज्ञान के धारी गणधर, वाणी झेला करते हैं-2।।
गणधर...।।2।।
नर तिर्यंच अरु देव सभी मिल, समवशरण में आते हैं-21
अपनी-अपनी भाषा में गुरु, अलग-अलग समझाते हैं-2।।
गणधर...।।3।।
दीक्षा धारण करते ही मुनि, चार ज्ञान प्रगटाते हैं -21
मति श्रुत अवधि मनःपर्यय शुभ, चार ज्ञान यह पाते हैं-21।।
गणधर...।।4।।
'विशद' साधना करने वाले, आतम ज्ञान जगाते हैं -2।
बुद्धि विक्रिया चारण आदि, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं-2।।
गणधर...।।5।।